© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

चौ. छाजूराम का शिक्षा व सामाजिक क्षेत्र में योगदान

विकास कुमार, Shri J.J.T. University, Jhunjhunu"

ISSN : 2348-5612 © URR
9 770234 856124

चौधरी छाजूराम एक साधारण परिवार से सम्बन्ध रखते थे उनका बचपन बड़े कष्ट के साथ बीता था। वे बचपन से ही मेहनती, लग्नी व ईमानदार थे तथा साथ ही पढ़ने में बहुत होशियार थे। वे उन गिने–चुने बच्चों में से थे जिन्होंने उस समय में दसवीं पास की ओर वो भी छात्रवृत्ति के साथ। इसके बाद वे कलकत्ता में पहुंचे और व्यापार में इतनी लक्ष्मी की कृपा हुई कि वे देश के सबसे बड़े अमीर व्यक्ति बन गए और सबसे बड़े दानी भी।

चौ0 साहब दानवीर सेठ कहलाए क्योंकि ज्याादातर दान शिक्षा के क्षेत्र में दिया। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए वे हमेशा तैयार रहते थे। उन्होनें पुरूषों और महिलाओं के लिए शिक्षा को जरूरी बताया तथा महिलाओं की शिक्षा पर उन्होनें ज्यादा जोर दिया, उनका मानना था कि जिस दिन देश की महिलाएं शिक्षित हो जांएगी, उस दिन देश अपने आप समृद्ध हो जाएगा। उस समय कलकत्ता से लेकर लाहौर तक शायद ही कोई ऐसी संस्था थी, जिसको उन्होनें दान न दिया हो जिसके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे है :–

1. कर्मवीर डा0 संसार सिंह जी ने कन्या गुरूकुल, कनखल की स्थापना की थी। इसके लिए चौ0 साहब ने बहुत बड़ी राशि भवन निर्माण के लिए दान दी।
2. गुरूकुल वृंदावन, बोलपुर आदि शिक्षण संस्थाओं को इन्होनें दिल खोलकर दान दिया जो आज भी इन शिक्षण संस्थानों में लगे पत्थरों पर अंकित है।
3. स्वामी श्रद्धानंद द्वारा गंगा के किनारे हरिद्वार में गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की। छाजूराम जी ने गुरूकुल को विश्वविद्यालय का दर्जा दिलवाने के लिए भवन निर्माण के लिए दिल खोलकर लाखों रूपये दान दिए।
4. बंगाल में आर्य कन्या विद्यालय बनवाने के लिए 50000 रू. की राशि अलग से दान में दी।
5. जब डीएवी कॉलेज, लाहौर बुरी तरह से आर्थिक संकट में फंसा हुआ था इसको चला पाना मुश्किल हो रहा था तो छाजूराम जी से मिलने कमेटी के लोग कलकत्ता पंहुचे और पूरी बात बता 31000 मांगे और उन्होनें 50000 रूपये दान में दिए।
6. पं0 लखपतराय और पं0 मेहरचंद चौ0 छाजूराम के पास डीएवी कालेज, जालन्धर के चंदा मांगने गए तो उन्हें 40000 रू. देकर विदा किया।
7. 1916 में सेठ चुनीलाल का हिसार में स्वर्गवास हो गया तो उनके मिर्जा ने उनकी स्मृति में एक संस्था, सीएवी हाई स्कूल (1918) की स्थापना कर दी किन्तु पैसे का अभाव आगे आ गया, ऐसे में

वे छाजूराम जी के पास गए और चौ0 साहब ने 67000 रू0 देकर संस्था के छात्राावास का निर्माण करवाया। यह उन्होनें अपने पुत्र अदित कुमार की याद में निर्माण करवाया।

8. चौ0 भानीराम रोहतक जिलें में जाट हाई स्कूल खोलने का निश्चय (1913) कर चुके थे। इसके लिए भी इन्होनें 61000 रू. का योगदान दिया और साथ की कहा कि जो दसवीं में प्रथम आएगा उसे सोने का मैडल और 12रू महीना छात्रवृति दी जाएगी और 1916 में सूरजमल खांडेवाला प्रथम आए और उन्हें मैडल दिया वे बाद में संयुक्त पंजाब में मंत्री भी रहे।
9. छाजूराम जी ने जाट स्कूल खेडागढी दिल्ली में स्कूल का निर्माण करवाया। इसके अलावा मेरठ के पास बजैत में स्कूल, इंटर कालेज बनवाए।

   इसके बाद लखावटी स्कूल, जाट स्कूल मुजफरनगर में भी खूब दान दिया।

   इसके अलावा उन्होनें हिसार में जाट कालेज का भी निर्माण करवाया। यह उन्होनें 1924–25 में बनवाया।
10. जिन दिनों पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने बनारस में हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की तो चंदे के लिए छाजूराम जी से मिले, तो बड़े सम्मान के साथ 11000/– रू0 दान स्वरूप दिए।
11. सेठ छाजूराम जी शिक्षण संस्थानों के लिए बहुत दिल खोलकर दान दिया करते थे क्योंकि इसी में देश के युवाओं का भविष्य निहित है इसलिए उन्होंने इन्द्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय की स्थापना के लिए सन् 1924–25 में 5000 रू0 का दान दिया। इसी विद्यालय में सुचिता कृपलानी व कमला नेहरू जैसी हस्तियां पढ़ी। वर्तमान में यह विश्वविद्यालय का रूप ले चुका है।
12. राजस्थान के संगरिया में स्वामी केश्वानंद द्वारा संचालित जाट हाई स्कूल के लिए 50 हजार रू0 का दान दिया। और वहां पर छात्र–छात्राओं को पीने के पानी के लिए एक बावड़ी के लिए 50000 रू0 दान स्वरूप दिए।
13. सन् 1924–25 में जाट हाई स्कूल हिसार की स्थापना के लिए चार लाख रू0 देकर स्कूल का भवन व छात्रावास का निर्माण करवाया।
14. अखिल भारतीय जाट महासभा की स्थापना सन् 1906 में क्रांतिवीर राजा महेन्द्र प्रताप की अगुवाई में हुई थी। उस समय इस अधिवेशन का खर्चा चौ0 छाजूराम ने 10000 रू0 देकर पूरा किया था।
15. प्रथम जाट इतिहास कालीरंजन कानूनगो द्वारा सन् 1925 में लिखा गया था। इस इतिहास को छपवाने का पूरा खर्चा सेठ चौ0 छाजूराम ने ही दिया था।
16. चौ0 छाजूराम जी ने रविन्द्र नाथ टैगोर के कलकत्ता में शांति निकेतन स्कूल के अतिरिक्त विश्व भारती के लिए भी दान दिया था।

17. सन् 1938–39 में कुछ ब्राह्मण रोहतक से गौड़ ब्राह्मण स्कूल रोहतक से चंदा मांगने आए तो छाजूराम जी ने 50000 रू0 दान दिए जबकि बिड़ला जी ने 11000 रू0 ही दे पाए थे।

    इसके अतिरिक्त उन्हानें उत्तरप्रदेश, कलकत्ता, हरियाणा और राजस्थान में न जाने कितने शिक्षण संस्थाए खोले जो आज हमारी शिक्षा की अग्रणी संस्थाए है।

चौ0 छाजूराम जी अनेक सामाजिक कार्य किए तथा उनमें सुधार करने का प्रयत्न किया। चौ0 साहब नें अपने गांव अलखपुरा व आस पास के क्षेत्र में गरीब किसानों के चरित्र निर्माण तथा शिक्षा में प्रचार व प्रसार के लिए बार बार दान दिया। चौ साहब जाट सभा के नियमों का सख्ती से पालन किया करते थे और उन्होनें दहेज प्रथा आदि बुराइयों का डटकर विरोध किया। उन्होनें पुत्र के विवाह पर 101 का दान दिया और कन्यादान 1 रू. लिया था।

चौ0 साहब ने हरियाणा के तोशाम से सिवानी जाने वाले मार्ग पर मीराण गांव में एक विशाल जलकुंड का निर्माण करवाया था क्योंकि इस गांव के निवासी पीने का पानी ऊँटों आदि पर लाद कर कई कई कोस से लाया करते थे।

चौ0 साहब ने विख्यात आर्य मुनि, जिन्होने वेदों के भाव्य लिखें थे इनको प्रकाशित करने का संपूर्ण खर्चा चौ0 साहब ने स्वेच्छा से वहन किया।

कलकत्ता के चितरंजन दास की स्मृति को बनाने के लिए जो धनराशि इकट्ठी हुई उसमें दस हजार की कमी रह गई तो गाँधी जी छाजूराम जी के पास गए और सारी समस्या बताई उन्होनें तुरंत 11000 की राशि दी। 5000 रू. अतिरिक्त राशि दी कि आगे देश सेवा के आप लगा देना। 1956 ई0 में देश भर में भंयकर अकाल पड़ा था इसे आम जनता छपने के अकाल के नाम से जानती है। चारे के अभाव में पशु तथा अन्न के अभाव में मनुष्य कीडे मकौडों की तरह मरने लगे थे। हालात इतने बुरे थे कि शमशान भूमि ठंडी नहीं हो पा रही थी। उन्होनें अनेक नर–नारियों एवं पशुओं को मौत के मुंह से बचाया। ऐसे समय मे छाजू राम जी ने देश के अनेक हिस्सों में अन्न, वस्त्र व पैसे से आर्थिक सहायता करके बहुत उपकार का कार्य किया था। सन् 1909 में सारे देश में प्लेग की महामारी फैल गई थी। देश के अधिकतर गांव शहर इसकी चपेट में आ गए थे, सारा देश प्लेग की भीषण ज्वाला में धधक रहा था, इस संकट की घडी में चौ0 साहब फिर से देश के लोगों के काम आए और विभिन्न केन्द्रों पर बने संगठनों को दान के तौर पर अन्न–धन–दवा तथा वस्त्र आदि भिजवाए, जिनकी कीमत उस समय लाखों की थी। सन् 1914 में दामोदर घाटी भंयकर बाढ आई उस समय उन्होनें अनेक लोगों को बचाया तथा गुप्त दान दिया। उन्होनें अनेक हस्पताल, गौशाला, अनाथालय बनवाए ताकि गरीबों की सहायता की जा सके। उन्होनें गरीब किसानों पर तरस आता था तथा उनकी हर समय मदद के लिए तैयार रहते थे। उन्होनें छोटूराम जी को भी किसानों की इस हालत के बारे बताया तथा उसमें सुधार की बात की। छोटूराम ने आजीवन किसानों के हितों के

लिए कार्य किया। और तो और जब उनका व्यापार चरम पर था तो एक स्थानीय बैंक दिवालीया होने की कगार पर था, सभी पैसे निकलवाने लगे, बैंक में जब अगले दिन मुंशी पैसे जमा करवाने गया तो पता चला कि ये हालात है तो उन्होनें पैसे निकलवाने की बजाए लोगों को समझाया और अपना पैसा भी नहीं निकलवाया। इस तरह बैंक भी बच गया।

दो युग पुरूषों का महामिलन : कई बार ऐसे सुखद संयोग बन जाते हैं जो आने वाले समय में यातो इतिहास बदल डालते हैं, या फिर एक नए इतिहास की संरचना कर देते हैं, चौ0 छाजूराम के जीवन में भी एक ऐसा ही संयोग आया, जिससे एक नया इतिहास लिखा गया।

हुआ यूं कि एक बार चौ0 सेठ छाजूराम रेलगाड़ी द्वारा मेरठ से कलकत्ता आ रहे थे और गाड़ी रास्ते में गाजियाबाद स्टेशन पर काफी देर रूकी रही। चौ0 साहब बाहर आए, इधर–उधर नजर दौड़ाई तो उनका ध्यान एक युवक पर गया। वह हुक्का पी रहा था, उन्होंने पूछा ''हुक्का कित जात का है ? उस समय गांव में ऐसे ही पूछ के हुक्का पीते थे ? तो उस युवक ने कहा, ''जाट का है साहब''। फिर उस युवक ने उसे दोबारा भरा और चौ0 साहब को थमा दिया। फिर युवक से उनका परिचय हुआ और उसने अपनी व्यथा और आर्थिक स्थिति बताई। चौ0 साहब को जेसे अपनी कहानी याद आ गई हो और उस युवक में अपने आप को देखने लगे। उनके चेहरे पर मानो वेदना उभर आई हो। उन्होंने कहा बेटे संघर्ष की हिम्मत हो तो तकदीर जरूर बदलती है।

उन्होंने उसका हौंसला बढ़ाया और उसका युवक को दाखिला लाहौर के डी.ए.वी. में करा दिया किन्तु बाद में वह दिल्ली के एक कॉलेज में ट्रांसफल करवा दिया गया। उन्होंने संस्कृत विषय में दाखिला लिया। चौ0 साहब ने उसको आर्थिक सहायता भी देनी शुरू कर दी और वह युवक और नहीं बल्कि सर छोटू राम ही थे। 1905 में उन्होंने बी.ए. की परीक्षा पास की। फिर लाहौर के डी.ए.वी. से कानून की परीक्षा पास की तथा आगे चलकर छोटूराम संयुक्त पंजाब में मालमंत्री बने और अपने सद्प्रयासों से रहबरे–आजम तथा किसानों और मजदूरों के मसीहा कहलाए।

माना जाता है कि अगर चौ. छाजूराम नहीं होते तो चौ. छोटूराम भी रहबरे आजम नहीं होते। और अगर वे रहबरे आजम नहीं होते तो आज किसानों के पास जमीन भी नहीं होती क्योंकि उन्होंने जमींदारा पार्टी का गठन करके संयुक्त पंजाब की सरकार में मंत्री रहते हुए किसानों और मजदूरों के लिए अनेकों कानून बनवाए, जिनके आधार पर इन वर्गों की आर्थिक स्थिति सुधरी और उन्हें इज्जत के साथ समाज में रहना और जीना नसीब हुआ।

इसके बाद जब तक चौ0 छाजूराम जीवित रहे, उनका चौ0 छोटूराम के साथ चोली–दामन का साथ रहा। चौ0 छोटूराम उन्हें अपना धर्मपिता कहकर पुकारते थे। बाद में चौ. छाजूराम ने चौ. छोटूराम को रहने के लिए और सुचारू रूप से अपना काम करने के लिए एक विशाल कोठी रोहतक में 30 हजार की लागत

से बनवाकर दी, जो आगे चलकर नीली कोठी के नाम से प्रसिद्ध हुई। यह कोठी आज भी अपने उसी स्वरूप में रोहतक के बीचों बीच खड़ी है तथा इसकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल हो रही है। इस कोठी में वर्तमान में चौ. श्रीचन्द के पौत्र चौ. महेन्द्र सिह रहते हैं। बताया जाता है कि चौ. श्रीचंद को चौ. छोटूराम जी ने गोद लिया था।

राजनीति में प्रवेश की मजबूरियां : चौ. छोटू राम जी के कहने पर चौं. साहब ने राजनीतिक में कदम रखा। हालांकि वे राजनीति को पसंद नहीं करते थे। छोटू के कहने पर भी वे न लड़ने पर अड़े रहें किन्तु बेटे सज्जन कुमार के कहने पर उन्होंने हिसार से 1926 में एम.एल.सी. का चुनाव लड़ा। उन्होंने चौ. लाजपत राय जी के खिलाफ चुनाव लड़ा और उनको भारी मतों से हराया। चौ. छोटूराम और सज्जन कुमार ने चुनाव प्रचार का काम संभाला। जब लाजपतराय जी हार कर घर गए तो सोच में पड़ गए कि कैसे कोई व्यक्ति बिना खुद आए, भाषण दिए बिना चुनाव जीत गया?

उसी वक्त छाजूराम जी लाजपतराय के घर आए और उनको गले लगाया कहा, भाई बधाई लेने आया हूं आप तो आए नहीं देने। उनको समझ नहीं आया कि कहा कहूं, विपक्षी पार्टी के प्रमुख व एम.एल. सी. खुद घर आए और बोले हार–जीत मायने नहीं रखती इससे ऊपर अपना भाईचारा है। तुम जीते, मैं जीता एक ही बात है।

निष्कर्ष

चौ. साहब बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। हर प्रकार से, हर वर्ग के साथ मिलकर काम करने का अन्दाज हर किसी को पसन्द था। वे जात–पात में विश्वास नहीं करते थे। चौ. साहब अमीर बनने के बाद जब गाँव आए तो गाँव वालों के साथ प्रेम व अपनत्व के साथ मिले। जब वे गाँव में कुछ बुजुर्गों के पास पहुँचे तो बैठे हुक्का पी रहे थे। उनको देखकर खड़े हो गए और बैठने के लिए मूढ़ा मंगवाया किन्तु वे उनके साथ ही नीचे बैठ गए और कहने लगे, यह मिट्टी भी तो अपनी है इसी में बड़ा हुआ हूं, खेला हूं। वहां सबका हालचाल पूछा, समस्या है तो बताओ, जो बताई उसके लिए जल्द ही निपटारे के लिए आश्वासन दिया। उनकी पत्नी ने जब उनके गाँव में पानी की समस्या बताई तो तुरन्त पैसे देकर गाँव भेजा और कहा कि जल्दी ही एक कुएं का निर्माण करवाओ तथा अपनी देख–रेख जल्द ही पूर्ण हो गया।

शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने जो किया है शायद ही किसी ने किया हो, स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल और न जाने कितनी शिक्षण संस्थाएं भारत वर्ष में खोले गए। वे आर्य समाजी थे तो आर्य समाज मंदिर के लिए चंदा भी देते थे। उनके बंगाली मित्र भी थे, मारवाड़ी भी थे। सबकी मदद करते थे, उन्होंने गांधी, भगत सिंह, दुर्गा भाभी बोस, रविन्द्रनाथ टैगोर, मालवीय जी, न जाने कितने महापुरूषों को दान देकर आर्थिक मदद की। वे कभी किसी को गुस्सा नहीं करते थे और जो उन्हें करते तो उनको मुस्कराकर टाल देते थे। उन्होंने भारतीयों ही नहीं अनेक अंग्रेज अधिकारियों की भी मदद की।

चौ. छाजूराम ने गाँव अलखपुरा के बाहर एक धर्मशाला बनवाई थी ताकि उधर से गुजरने वाले मुसाफिरों की यहां रात के समय ठहरने की व्यवस्था हो और खाने की भी। यहां यह व्यवस्था 24 घण्टे उपलब्ध करवाई गई और बीच–बीच में देखने के लिए स्वयं आते जाते रहते थे। उन्होंने भगत सिंह को भी अपने घर शरण दी तथा उनकी आर्थिक मदद भी की। इससे पता चलता है कि उनमें देशभक्ति कितनी कूट–कूट कर भरी हुई थी। चौ. छाजूराम अपने आप में एक इतिहास थे, जिन्होंने दोनों हाथों से अपनी धन संपदा देश को आजाद करवाने में, बच्चों को शिक्षित करने में, नारी शिक्षा को बढ़ावा देने में, प्यासे लोगों के लिए कुएं व बावड़ियां बनवाने में, देशभक्तों को आर्थिक सहायता देने में शिक्षण संस्थाएं खोलने में तथा धर्मशालाएं व आश्रय स्थल खोलने पर खर्च कर दी। दुःखी मानवता के आंसू पोंछने के लिए उन्होंने जो किया, उसका अन्यत्र उदाहरण मिलना कठिन ही नहीं असंभव है।

उन्होंने जो कार्य परोपकार के लिए किए, जो कार्य भाईचारा बनाने के लिए किए उन्हें सदा याद किया जाएगा तथा आज भी वह चीजें युवाओं के प्ररेणास्त्रोत है। चाहे राजनीति में प्रवेश व हारे हुए व्यक्ति के प्रति संवेदना तथा राजनीति से ऊपर भाईचारा रखना या आजादी के लिए क्रांतिकारियों के लिए मदद करना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्मा जे.के. – महान दानबीर चौ. छाजूराम लांबा, भिवानी 2013
2. जुनेजा एम.एम. – पं. नेकी राम शर्मा (हिसार – मॉडर्न पब्लिशर्स, 2006)
3. सिंह बिजेन्द्र, धर्मपाल, किशन व महेन्द्र – आधुनिक जाट इतिहास (आगरा – जयपाल एजेन्सि 1998)
4. मलिक शिवा एन. – सेठ छाजू राम, (1861–1943), 1994
5. अ लैटर ऑफ चौ. चन्द्र भान फॉर्मर एम.एल.ए. – दिनांक 21.09.1993
6. जुनेजा एम.एम. – हिस्ट्री ऑफ हिसार, 1–16 सितम्बर, 1991
7. जुनेजा एम.एम. तथा मोर कुलबीर सिंह, द डियान्स ऑफ डॉ0 रामजी लाल हुड्डा – माडर्न बुल कम्पनी हिसार, 1989,
8. भानु हंस उदय – हरियाणा गौरव – गाथा (भिवानी – शिशर प्रकाशन, 1981)
9. शास्त्री प्रताप सिंह – अलखपुरा से कलकत्ता, हिसार 1978
10- जघीना, ठाकुर देशराज – जाट इतिहास, श्री ब्रजिन्दर साहित्य समिति आगरा, 1934